Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवाएं

राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग - 6

भारतीय अर्थशास्त्र एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भारतीय अर्थशास्त्र एवं वैश्विक अर्थव्यवस्था

भाग – 6

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत	1
2.	बजट निर्माण	5
3.	लोक वित्त	14
4.	भारत में कर सुधार	23
5.	राष्ट्रीय आय	33
6.	आर्थिक संवृद्धि एवं विकास	43
7.	स्टॉक एक्सचेंज और शेयर मार्केट	54
8.	धन एंव पैसे की आपूर्ति	61
9.	भारत में बैंकिंग	69
10.	मौद्रिक नीति	95
11.	मुद्रस्फीति	102
12.	सब्सिडी एवं सार्वजनिक वित्त प्रणाली	111
13.	ई-कॉमर्स	115
14.	अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र	120
15.	कृषि एवं कृषि से जुड़े मुद्दे एंव पहल	123
16.	उद्योग एंव औधोगिक क्षेत्र की प्रवृतियाँ	148
17.	सेवा क्षेत्र	161
18.	आर्थिक सुधार	169
19.	गरीबी एवं बेरोज़गारी	174
20.	स्वास्थ्य सेवा	183
21.	शिक्षा नीति	194
22.	सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता	202
23.	वस्तुएँ - सार्वजनिक, निजी एंव मैरिट	214
24.	आर्थिक विकास में राज्य की भूमिका एवं प्रभावी वियामक	218
25.	प्रमुख आर्थिक समस्या	224
26.	विकासशील, उभरते और विकसित देश	227
27.	वैश्विक आर्थिक मुद्दे और प्रवृत्तियां	229
28.	भारतीय अर्थव्यवस्था में हाल के रुझान	245
29.	सतत विकास एंव जलवायु परिवर्तन	251

1
CHAPTER

अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत

सूक्ष्म और स्थूल अर्थव्यवस्था

व्यष्टि अर्थशास्त्र /सूक्ष्म अर्थव्यवस्था	समष्टि अर्थशास्त्र /स्थूल अर्थव्यवस्था
• व्यष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत अर्थव्यवस्था की एक इकाई या इकाई के भाग के रूप में अर्थsव्यवस्था के छोटे-छोटे पहलुओं अर्थात् व्यक्तिगत आर्थिक इकाइयों का अध्ययन किया जाता है, जैसे- एक उपभोक्ता, एक उत्पादक, एक फर्म अथवा एक उद्योग, एक बाजार इत्यादि। • अर्थव्यवस्था की सूक्ष्म जानकारी किसी व्यक्ति, फर्म, घरेलू कार्य की नीति निर्धारण, यथा उत्पादन, उपभोग, मूल्य निर्धारण इत्यादि में सहायक होती है। • माँग और आपूर्ति, साथ ही अन्य कारक जो मूल्य स्तरों को प्रभावित करते हैं। • संभावित निवेशकों द्वारा निर्णय लेने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। • एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं को दर्शाता है। • यह भविष्यवाणी भी करता है कि भविष्य में किन वस्तुओं और सेवाओं की अत्यधिक माँग होगी। • प्रोफेसर राग्नार फ्रिस्क ने सूक्ष्म अर्थशास्त्र शब्द दिया।	• समष्टि अर्थशास्त्र के अंतर्गत अर्थव्यवस्था के बड़े पहलुओं अर्थात् संपूर्ण अर्थव्यवस्था अथवा संपूर्ण अर्थव्यवस्था के समुच्चयों से संबंधित अध्ययन किया जाता है, जैसे- राष्ट्रीय आय, राजकोषीय नीति, मौद्रिक नीति, सरकारी बजट, आर्थिक संवृद्धि, आर्थिक विकास, मुद्रास्फीति, गरीबी, बेरोजगारी इत्यादि। • इस बात का अध्ययन करता है कि देश और सरकारें व्यावसायिक निर्णय कैसे लेते हैं। • अर्थव्यवस्था की दिशा और प्रकृति को समझने के लिए ऊपर से नीचे तक पूरी खोज करती है। • आर्थिक और राजकोषीय नीति का विश्लेषण करने की एक विधि है। • सुनिश्चित करती है कि देश के आर्थिक संसाधनों का उपयोग उनकी पूरी क्षमता के लिए किया जाता है या नहीं। • जॉन मेनार्ड कीन्स को आमतौर पर समकालीन समष्टि आर्थिक सिद्धांत का जनक माना जाता है।

आर्थिक प्रणाली

- संसाधनों को आवंटित करने और पूरे देश में वस्तुओं और सेवाओं को वितरित करने के लिए संस्थागत व्यवस्थाओं और समन्वय तंत्र का समूह

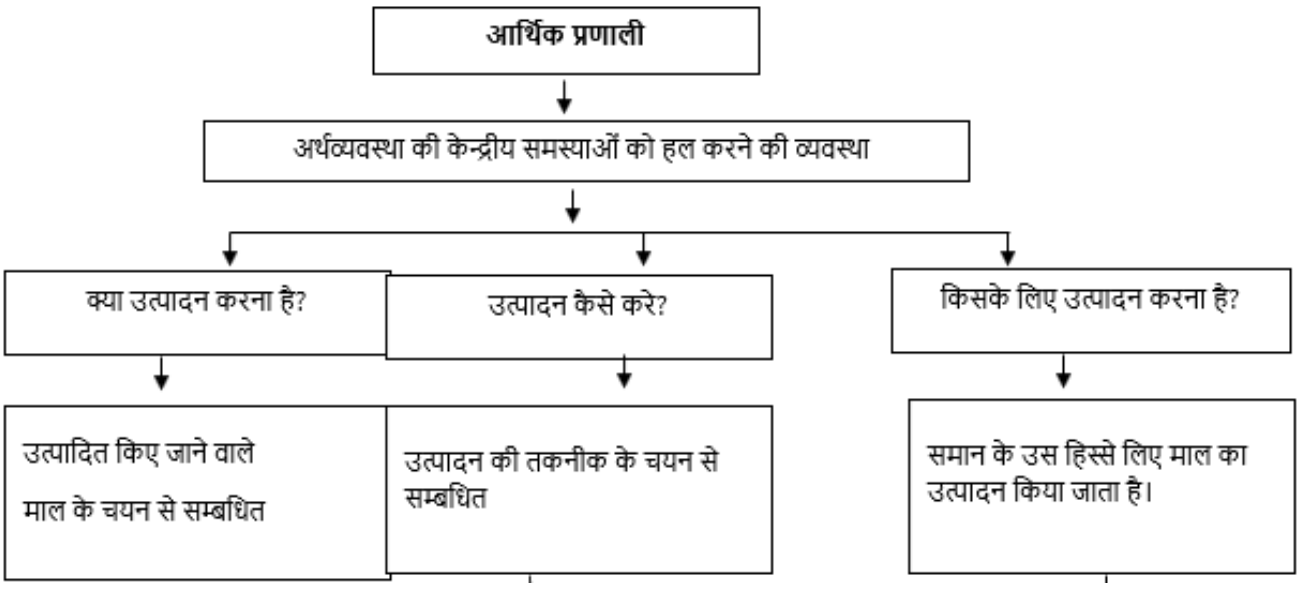

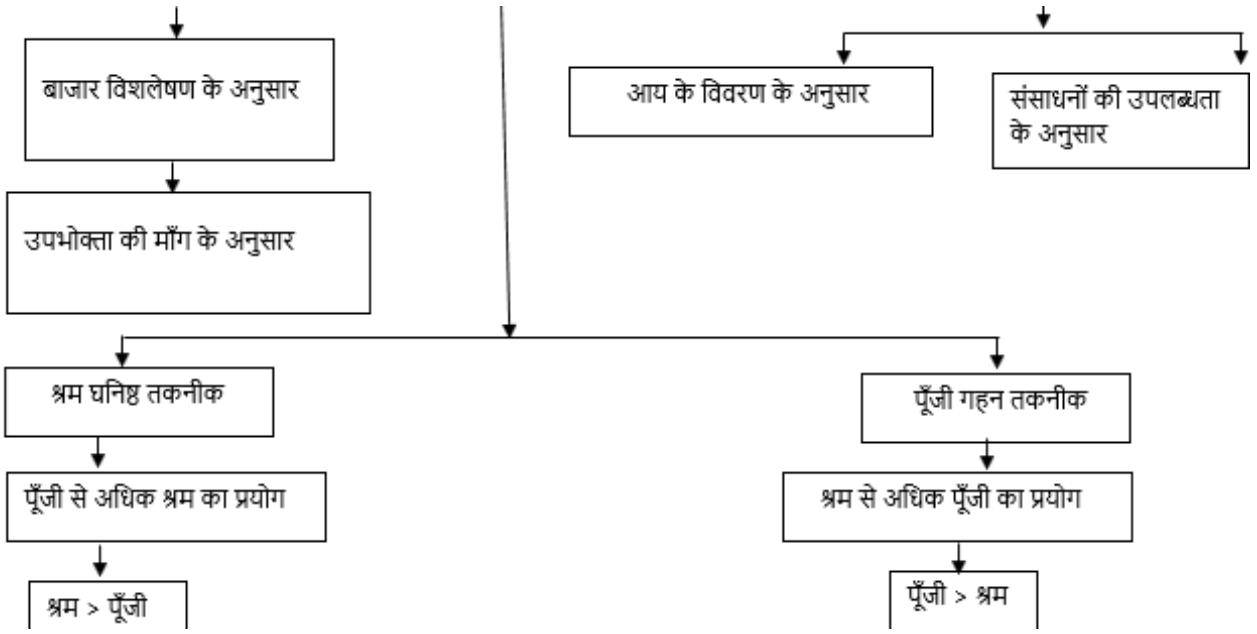

विभिन्न आर्थिक प्रणालियाँ

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था (UPSC PRE 2014)	• उत्पादक उन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने के लिये स्वतंत्र हैं जिनकी माँग अधिक है। • उपभोक्ता अपने चयन एवं रुचि के अनुरूप वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदने के लिये स्वतंत्र होते हैं। • एक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पन्न उत्पादों को व्यक्तियों के बीच वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की क्षमता के आधार पर वितरित किया जाता है, बजाय इसके कि वे क्या चाहते हैं। • उत्पादों और सेवाओं को खरीदने के लिए व्यक्ति के पास पर्याप्त धन होना चाहिए। • माँग के बावजूद क्रय शक्ति की कमी के कारण माल का उत्पादन नहीं हो सकता है। • यू.एस.ए. (USA), यू.के. (UK), फ्रांस, नीदरलैण्ड, स्पेन, पुर्तगाल, आस्ट्रेलिया आदि पूँजीवादी देशों के रूप में जाना जाता है।
समाजवादी अर्थव्यवस्था	• सरकार तय करती है कि क्या, कैसे और किसके लिए उत्पाद बनाया जाए। (सरकार अंतिम निर्णायक के रूप में।) • योग्यता और आवश्यकता के अनुसार उत्पाद तैयार। • निजी स्वामित्व की धारणा नहीं। • उत्पादन के संसाधनों का सामूहिक स्वामित्व। • समाज के कल्याण का ध्येय सरकार। • **केन्द्रीय नियोजन** आर्थिक नियोजन समाजवादी अर्थव्यवस्था की एक मूलभूत विशेषता है। • विषमताओं में कमी। • वर्ग संघर्ष की समाप्ति - समाजवाद में वर्गों में कोई प्रतियोगिता नहीं होती। सभी व्यक्ति श्रमिक होते हैं। इसलिये कोई वर्ग संघर्ष नहीं होता। सभी सह-कर्मी होते हैं। • रूस, चीन तथा पूर्वी यूरोप के अनेक देशों को समाजवादी देश कहा जाता है।
मिश्रित अर्थव्यवस्था	• निजी तथा सार्वजनिक क्षेत्रकों का सह-अस्तित्व। • व्यक्तिगत स्वतंत्रता होती है । • अर्थव्यवस्था कभी भी स्थायी रूप से राज्य के हस्तक्षेप या मुक्त बाजार की ओर नहीं झुकी बल्कि अर्थव्यवस्था की सामाजिक-आर्थिक स्थिति की आवश्यकताओं के अनुसार हमेशा राज्य और बाजार का संतुलित मिश्रण रही। • भारत में मिश्रित अर्थव्यवस्था है

पूँजीवादी, समाजवादी और मिश्रित अर्थव्यवस्थाओं में अंतर

मापदंड	पूँजीवादी अर्थव्यवस्था	समाजवादी अर्थव्यवस्था	मिश्रित अर्थव्यवस्था
स्वामित्व	निजी	सार्वजनिक	सार्वजनिक और निजी दोनों
मूल्य निर्धारण	बाजार की ताकतों से	केंद्रीय नियोजन प्राधिकरण द्वारा	केंद्रीय योजना प्राधिकरण और बाजार शक्तियों द्वारा

उत्पादन का उद्देश्य	लाभ कमाना	सामाजिक कल्याण	निजी क्षेत्र में लाभ और सार्वजनिक क्षेत्र में कल्याण
सरकार की भूमिका	कोई भूमिका नहीं	पूर्ण नियंत्रण में	सार्वजनिक क्षेत्र में पूर्ण भूमिका और निजी क्षेत्र में सीमित
प्रतिस्पर्द्धा	मौजूद	कोई प्रतियोगिता नहीं	केवल निजी क्षेत्र में
आय वितरण	बहुत असमान	बिल्कुल बराबर	काफ़ी असमानताएँ मौजूद होती हैं।

विकास के स्तर के आधार पर अर्थव्यवस्थाओं के प्रकार

विकसित अर्थव्यवस्था	विकासशील अर्थव्यवस्था
• विकसित देशों में राष्ट्रीय और प्रतिव्यक्ति आय तथा पूँजी निर्माण अर्थात् बचत और निवेश के स्तर उच्च होते हैं। • मानवीय संसाधन अधिक शिक्षित होते हैं। • जन सुविधाओं, चिकित्सा-स्वास्थ्य तथा स्वच्छता प्रबंध सुविधाएँ, बेहतर होती हैं। • मृत्यु दर, शिशु मृत्यु दर निम्न होती हैं। • औद्योगिक और सामाजिक आधारिक संरचना तथा पूँजी और वित्त बाजार भी विकसित होते हैं। • जीवन स्तर उन्नत होता है।	• इन देशों में राष्ट्रीय तथा प्रति व्यक्ति आय निम्न होती हैं। • इनके कृषि और उद्योग पिछड़े होते हैं। • बचत, निवेश और पूँजी निर्माण का स्तर निम्न होता है। • इन देशों में निर्यात से आय होती है पर अधिकांशतः ये प्राथमिक और कृषि उत्पाद ही निर्यात कर पाते हैं। • निम्न जीवन स्तर के इन देशों में उच्च शिशु मृत्यु दर, जन्म एवं मृत्यु दरें और स्वास्थ्य, स्वच्छता प्रबंध तथा आधारिक संरचना का स्तर भी निम्न होता है। • आर्थिक विकास अनेक कारकों पर निर्भर करता है

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

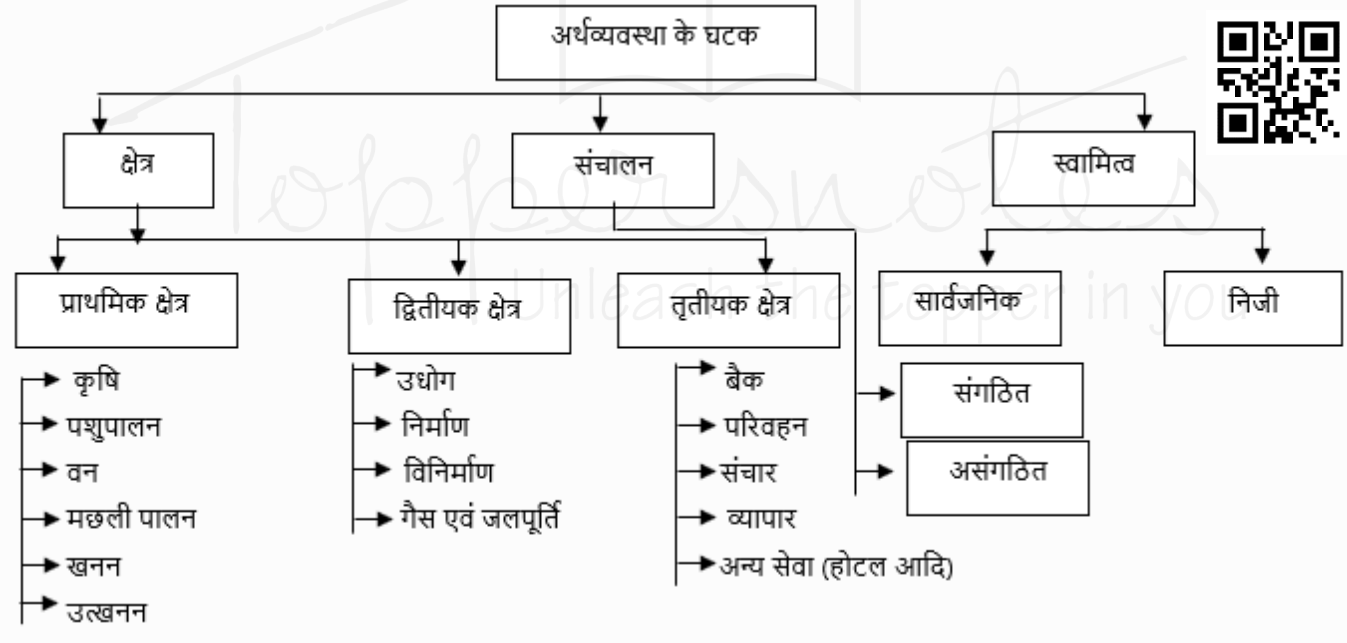

आर्थिक गतिविधि की प्रकृति पर आधारित

प्राथमिक क्षेत्र

- प्राकृतिक संसाधनों की निकासी या कच्चे माल के निर्माण में शामिल उद्योग।
- उदाहरण के लिए कृषि, मछली पकड़ना और खनन, उत्खनन आदि।

द्वितीयक क्षेत्र

- उपयोगी वस्तुओं या पूर्ण वस्तुओं के उत्पादन में शामिल उद्योग।
- जैसे - भारी और हल्के उद्योग (इस्पात, रसायन और ऑटोमोबाइल) (भोजन, परिधान, सौंदर्य प्रसाधन)।

तृतीयक क्षेत्र

- अन्य फर्मों या अंतिम उपभोक्ताओं को सेवाएँ प्रदान करना।
- उदाहरण - खुदरा, स्वास्थ्य देखभाल, और अन्य उद्योग।

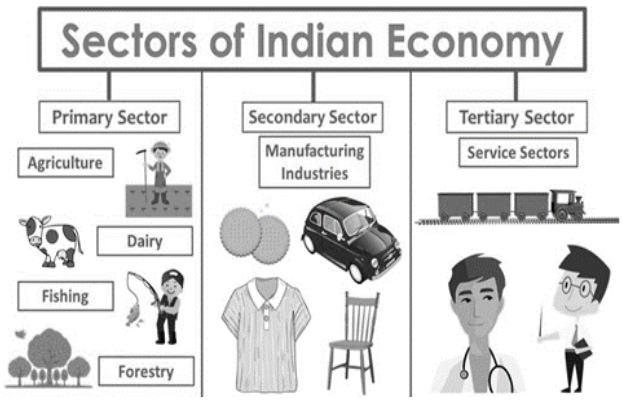

चतुर्थक क्षेत्र	• ज्ञान के निर्माण और प्रसार में निहित। • जैसे - अनुसंधान और विकास, शिक्षा आदि।
पंचम क्षेत्र	• किसी अर्थव्यवस्था में निर्णय लेने का उच्चतम स्तर।
गुलाबी कॉलर नौकरियाँ	• वह नौकरी जिसे पारंपरिक रूप से महिलाओं का काम या महिला-उन्मुख नौकरी माना जाता है। • अधिक पेशेवर प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। • जैसे - दाई, फूलवाला, डे केयर वर्कर, नर्स आदि।

कार्य की स्थिति पर आधारित

संगठित क्षेत्र

- उन **उद्यमों या कार्यस्थलों** को शामिल करता है जहाँ **रोजगार की शर्तें नियमित** होती हैं।
- सरकार द्वारा पंजीकृत और इसके नियमों और विनियमों का पालन करना होता है जो विभिन्न कानूनों जैसे फैक्ट्री अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी अधिनियम, ग्रेच्युटी भुगतान अधिनियम, दुकान और प्रतिष्ठान अधिनियम आदि में दिए गए हैं।

असंगठित क्षेत्र

- **छोटी और बिखरी हुई इकाइयाँ** जो सरकार के नियंत्रण में नहीं होती हैं। **नियम और कानून हैं** लेकिन उनका **पालन नहीं किया** जाता है।
- कम वेतन वाली नौकरियाँ, अक्सर नियमित नहीं होती हैं।
- **रोजगार सुरक्षित नहीं** है और **नियोक्ता की इच्छा पर निर्भर** करता है।
- असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम, 2008 की अनुसूची- II में उल्लिखित कल्याणकारी योजनाओं से संबंधित किसी भी अधिनियम द्वारा कवर नहीं किया गया है।
- इसके अंतर्गत घर पर काम करने वाले कर्मचारी या स्वरोजगार करने वाले कर्मचारी या मजदूरी करने वाले कर्मचारी शामिल किए जाते हैं।

संपत्ति के स्वामित्व के आधार पर

सार्वजनिक क्षेत्र

- **स्वामित्व - सरकार के** तहत।
- मुख्य रूप से **सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन** करने के उद्देश्य से।
- **जैसे** - रेलवे, भारतीय डाक सेवाएँ, आदि।

निजी क्षेत्र

- **स्वामित्व - निजी व्यक्तियों या कंपनियों के** अधीन।
- **उदाहरण** - टाटा आयरन एंड स्टील कंपनी लिमिटेड (टिस्को) या रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड (आरआईएल) जैसी कम्पनियाँ निजी स्वामित्व वाली हैं।

सूर्योदय उद्योग(सनराइज उद्योग)

- वह औद्योगिक क्षेत्र जो अभी अपनी प्रारंभिक अवस्था में है, लेकिन तेजी से उछाल का वादा करता है।
- उच्च विकास दर, उच्च स्तर के नवाचार और आमतौर पर इस क्षेत्र के बारे में बहुत सारी जन जागरूकता होती है और निवेशक इसकी दीर्घकालिक विकास संभावनाओं से आकर्षित होते हैं।
- जैसे -
  - सूचना प्रौद्योगिकी
  - दूरसंचार क्षेत्र
  - स्वास्थ्य सेवा
  - आधारभूत संरचना क्षेत्र
  - खुदरा क्षेत्र
  - खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
  - मत्स्य पालन।

2
CHAPTER

बजट निर्माण

वार्षिक वित्तीय विवरण (बजट)

- बजट शब्द का प्रयोग संविधान में कहीं नहीं किया गया है।
- **अनुच्छेद 112 -** केंद्रीय बजट जिसे वार्षिक वित्तीय विवरण (AFS) कहा जाता है।
- इसमें सरकार की अनुमानित प्राप्तियाँ और व्यय (एक वित्तीय वर्ष) शामिल हैं। (चालू वर्ष के 1 अप्रैल से अगले वर्ष के 31 मार्च तक)।

बजट के प्रकार

संतुलित बजट	• सरकार अपने द्वारा एकत्रित राजस्व के बराबर राशि खर्च कर सकती है।
अधिशेष बजट	• यदि अपेक्षित सरकारी राजस्व किसी विशेष वित्तीय वर्ष में अनुमानित सरकारी व्यय से अधिक है।
घाटा बजट	• यदि अनुमानित सरकारी व्यय किसी विशेष वित्तीय वर्ष में अपेक्षित सरकारी राजस्व से अधिक है।
परिणाम बजट	• यह एक ऐसा बजट है जो परिव्ययों को परिणामों में परिवर्तित करता है। • व्यय की योजना बनाकर, उपयुक्त लक्ष्य निर्धारित करके, प्रदेयों की मात्रा निर्धारित करके। • विभिन्न मंत्रालयों के अंतर्गत प्रत्येक योजना/कार्यक्रम के परिणामों को सभी की जानकारी में लाना।
लिंग बजटिंग	• यह एक लेखांकन अभ्यास नहीं है बल्कि नीति/कार्यक्रम निर्माण, इसके कार्यान्वयन और समीक्षा में एक जेंडर परिप्रेक्ष्य रखने की एक सतत प्रक्रिया है।
शून्य आधारित बजटिंग	• हर बार बजट बनने पर सभी खर्चों का मूल्यांकन किया जाता है और प्रत्येक नई अवधि के लिए खर्चों को उचित ठहराया जाता है।
सूर्यास्त बजटिंग	• एक समय सीमा के साथ घोषित - एक निर्धारित समय के भीतर आत्म-विनाश के लिए डिज़ाइन किया गया।

बजट घटक

- राजस्व और पूँजीगत प्राप्तियों का अनुमान।
- राजस्व बढ़ाने के तरीके और साधन।
- व्यय का अनुमान।
- वास्तविक प्राप्तियों और व्यय का विवरण (अंतिम वित्तीय वर्ष)।
- आने वाले वर्ष की आर्थिक और वित्तीय नीति।
  - इसमें कराधान प्रस्ताव, राजस्व की संभावनाएँ, व्यय कार्यक्रम और नई योजनाओं/परियोजनाओं की शुरूआत शामिल है।

प्राप्तियाँ

राजस्व प्राप्तियाँ	• कर राजस्व - सरकार द्वारा प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर के रूप में एकत्र किया जाता है। • गैर-कर राजस्व - PSU से लाभ और लाभांश, सरकार द्वारा प्राप्त अनुदान, वित्तीय और सामान्य सेवाएँ, सरकार द्वारा अग्रेषित ऋण पर ब्याज, शुल्क, दंड, जुर्माना आदि।
गैर-राजस्व प्राप्तियाँ	• सरकार द्वारा लिया गया ऋण जो सरकार पर वित्तीय दायित्व रखता है।

व्यय

राजस्व व्यय	• किसी भी संपत्ति के निर्माण या दायित्व में कमी के कारण व्यय नहीं। • जैसे - सरकारी कर्मचारियों का वेतन, ऋण पर ब्याज भुगतान, पेंशन, सब्सिडी, अनुदान, ग्रामीण विकास, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ आदि।

	• उद्देश्य - सरकारी मशीनरी के सामान्य कामकाज को सुनिश्चित करना। ○ किसी भी पूँजीगत संपत्ति का निर्माण नहीं करना। ○ प्रकृति में आवर्ती।
पूँजीगत व्यय	• व्यय या तो एक संपत्ति बनाता है (जैसे स्कूल की इमारत) या देयता को कम करना (जैसे ऋण का पुनर्भुगतान)। • ऋण का पुनर्भुगतान (यह देयता को कम करता है)। • प्रकृति में गैर-आवर्ती।

विकासात्मक और गैर-विकासात्मक व्यय

विकासात्मक व्यय	गैर-विकासात्मक व्यय
• उत्पादक प्रकृति के सभी व्यय। • **उदाहरण** - नए कारखानों, बाँधो, पुलों, सड़कों, रेलवे, आदि के प्रमुखों पर सभी निवेश।	• उपभोग्य प्रकार के व्यय और इसमें कोई उत्पादन शामिल नहीं है। • **उदाहरण** - वेतन, पेंशन, ब्याज भुगतान, सब्सिडी, रक्षा खर्च आदि का भुगतान।

योजनागत और गैर-योजनागत व्यय

योजना व्यय	गैर योजना व्यय
• सभी व्यय - भारत में नियोजन के नाम पर किया जाता है। • विकासात्मक व्यय के रूप में जाना जाता है। • **उदाहरण** - सभी परिसंपत्ति निर्माण और उत्पादक व्यय।	• व्यय - अनियोजित। • गैर-विकासात्मक के रूप में जाना जाता है। • **उदाहरण** - सभी उपभोग्य, गैर-उत्पादक, गैर-परिसंपत्ति भवन।

बजट में अनुमान

वास्तविक अनुमान	• सरकार द्वारा संबंधित क्षेत्र को दी गई वास्तविक राशि का प्रतिनिधित्व करता है।
बजट अनुमान (BE)	• आने वाले वित्तीय वर्ष के लिए किसी भी मंत्रालय या योजना को बजट में आवंटित राशि। • वास्तविक से BE में परिवर्तन अवधि के लिए चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) का प्रतिनिधित्व करता है। • सरकार की इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है।
संशोधित अनुमान (RE)	• बजट के शेष, नई सेवाओं और सेवा के साधनों आदि को ध्यान में रखते हुए संभावित व्यय का मध्य वर्ष का मूल्यांकन। • इन पर संसद द्वारा मतदान नहीं किया जाता है और इसलिए ये स्वयं खर्च करने के लिए कोई प्राधिकरण नहीं देते हैं। • संशोधित अनुमानों में किए गए किसी भी अतिरिक्त अनुमानों को खर्च करने से पहले संसद या पुनर्विनियोग आदेश द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिए।
त्वरित अनुमान (QE)	• नवीनतम स्थिति को दर्शाने वाले संशोधित अनुमान का प्रकार। • किसी क्षेत्र या उप-क्षेत्र के लिए भविष्य के अनुमानों के लिए उपयोगी। • यह एक अंतरिम डेटा भी है।
अग्रिम अनुमान (AE)	• एक त्वरित अनुमान की तरह लेकिन अंतिम चरण से पहले जब डेटा एकत्र किया जाता है। • यह एक अंतरिम डेटा भी है।

बजट के अधिनियमन की प्रक्रिया

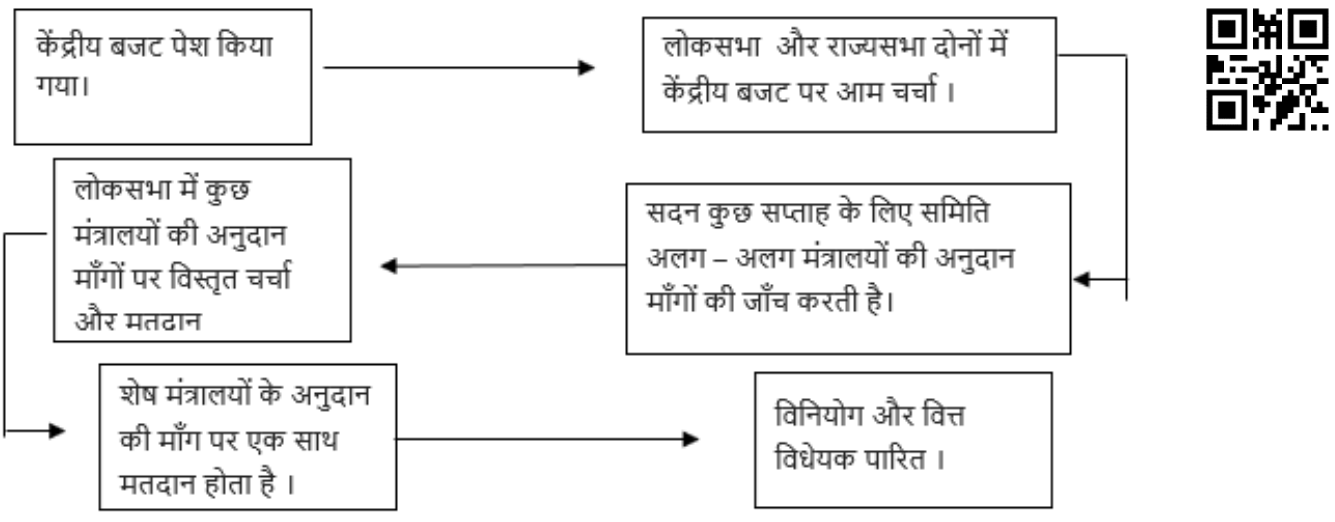

सरकारी खाते

भारत की संचित निधि	• यह एक ऐसा कोष है जिसमें सभी प्राप्तियों को जमा किया जाता है और सभी भुगतानों को डेबिट किया जाता है। • **शामिल** ○ सरकार द्वारा प्राप्त सभी राजस्व। ○ ट्रेजरी बिल, ऋण या अग्रिम के तरीके और साधन जारी करके उठाए गए सभी ऋण, ○ प्राप्त सभी धन - ऋणों के पुनर्भुगतान में भारत की संचित निधि का निर्माण होता है।
भारत का सार्वजनिक खाता	• अन्य सभी सार्वजनिक धन (उनके अलावा जो CFI में जमा किए जाते हैं) सरकार द्वारा या सरकार की ओर से प्राप्त किए जाते हैं और भारत के सार्वजनिक खाते में जमा किए जाते हैं। शामिल हैं - भविष्य निधि जमा, न्यायिक जमा, बचत बैंक जमा, विभागीय जमा, प्रेषण आदि । • इस तरह के भुगतान ज्यादातर बैंकिंग लेनदेन की प्रकृति में होते हैं।
भारत की आकस्मिकता निधि	• इस कोष को कानून द्वारा निर्धारित राशि का समय-समय पर भुगतान किया जाता है।

घाटा वित्तपोषण

- **घाटा वित्तपोषण** - राजस्व से अधिक व्यय के परिणामस्वरूप होने वाले घाटे को वित्तपोषित करने के लिए धन का सृजन।
- **स्रोत** - बाहरी सहायता, बाहरी अनुदान, बाहरी और आंतरिक उधार, मुद्रा की छपाई।

भारत में घाटा वित्तपोषण

- स्वतंत्रता के ठीक बाद भारत को एक नियोजित अर्थव्यवस्था घोषित किया गया था।
- रुपये के साथ-साथ विदेशी मुद्रा रूपों में भी भारी धन की आवश्यकता थी क्योंकि सरकार की विकास जिम्मेदारियाँ बहुत अधिक थीं।
- भारत को अपनी पंचवर्षीय योजनाओं का समर्थन करने के लिए आवश्यक निधि के प्रबंधन में निरंतर संकट का सामना करना पड़ा क्योंकि न तो विदेशी धन लिया जा सकता था और न ही आंतरिक संसाधन पर्याप्त मात्रा में जुटाए जा सकते थे।
- 1960 ई. के दशक के अंत तक, सरकार ने घाटे के वित्तपोषण की ओर अग्रसर किया और 1970 ई. के दशक से, भारत ने उच्च और उच्च राजकोषीय घाटे के लिए जाना शुरू कर दिया और हर नए साल के साथ घाटे के वित्तपोषण में वृद्धि पर अधिक से अधिक निर्भर हो गया।

घाटे के वित्तपोषण की आवश्यकता

- यह तब होता है जब सरकार को विकास और विकास के लिए जाने के लिए किसी विशेष अवधि में अर्जित या उत्पन्न होने से अधिक धन खर्च करने की आवश्यकता होती है।
- एक बार वृद्धि होने के बाद, आय से अधिक खर्च किए गए अतिरिक्त धन की प्रतिपूर्ति या पुनर्भुगतान किया जाता है।
- भारत ने 1969 ई. में घाटे के वित्तपोषण में अपना हाथ आजमाया और 1970 ई. के दशक से यह एक नियमित घटना बन गई।

घाटे के वित्तपोषण के साधन

- ये वे तरीके हैं जिनके द्वारा सरकार विकास या राजनीतिक जरूरतों के लिए अपने बजट को बनाए रखने के लिए घाटे के रूप में बनाई गई राशि का उपयोग करती है।

ये साधन नीचे दिए गए हैं -

बाहरी सहायता	• सरकार की घाटे की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ये सबसे अच्छे साधन हैं । • सरकार अपनी आर्थिक जरूरतों को बनाए रखने के लिए किसी भी अंतर्राष्ट्रीय संस्था या किसी अन्य देश से बाहरी सहायता प्राप्त कर सकती है । • इन्हें नरम ब्याज या बिना ब्याज के दिया जा सकता है ।
बाहरी उधार	• राजकोषीय घाटे को प्रबंधित करने का ये अगला सबसे अच्छा तरीका है । • चूँकि बाहरी ऋण तुलनात्मक रूप से सस्ते और लंबी अवधि के होते हैं। • इन्हें आंतरिक उधारों से बेहतर माना जाता है -

	○ बाहरी उधार विदेशी मुद्रा/हार्ड मुद्रा लाता है जो सरकारी खर्च को अतिरिक्त बढ़त देता है। ● चूँकि बाहरी ऋण तुलनात्मक रूप से सस्ते और लंबी अवधि के होते हैं। ● इनके अपने फायदे हैं और इन्हें दो कारणों से आंतरिक उधारी से बेहतर माना जाता है - ○ सरकारी खर्च को अतिरिक्त बढ़त देता है क्योंकि इससे सरकार देश के अंदर और साथ ही देश के बाहर से अपनी विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा कर सकती है। ○ इसे 'क्राउडिंग आउट इफेक्ट' के कारण आंतरिक उधारी पर प्राथमिकता दी जाती है। ○ जिसका अर्थ है कि सरकार देश के बैंकों से उधार लेती है और दूसरों के लिए निवेश उद्देश्यों के लिए उधार लेने की गुंजाइश नहीं बची है ।
आंतरिक उधार	● यह राजकोषीय घाटे के प्रबंधन के तीसरे पसंदीदा मार्ग के रूप में आता है। ● लेकिन यह सार्वजनिक और कॉर्पोरेट क्षेत्र की निवेश संभावनाओं को बाधित करता है।

	● **अर्थव्यवस्था पर प्रभाव** - अर्थव्यवस्था दोहरे नकारात्मक प्रभाव की ओर अग्रसर है । ○ कम निवेश, कम उत्पादन, कम सकल घरेलू उत्पाद और कम प्रति व्यक्ति आय, आदि) और ○ अर्थव्यवस्था में आम जनता के साथ-साथ कॉर्पोरेट जगत द्वारा कम माँग - अर्थव्यवस्था या तो गतिरोध के लिए चलती है या मंदी के लिए । ○ **उदाहरण** - भारत में 1960, 1970, 1980 के दशक में बार-बार हुआ।
मुद्रण मुद्रा	● यह सरकार के लिए अपने घाटे के प्रबंधन का अंतिम उपाय है। ● इसके साथ सबसे बड़ी बाधा यह है कि सरकार उन खर्चों के लिए नहीं जा सकती जो विदेशी मुद्रा में किए जाने हैं । **अर्थव्यवस्था पर प्रभाव** - ● यह मुद्रास्फीति को आनुपातिक रूप से बढ़ाता है। ● **उदाहरण** - 1970 ई. के दशक की शुरुआत से भारत नियमित रूप से इसके लिए गया और आमतौर पर दोहरे अंकों की मुद्रास्फीति को सहन करना पड़ा। ● यह सरकारी कर्मचारियों के वेतन और वेतन में वृद्धि के लिए सरकार पर नियमित दबाव और दायित्व लाता है । ● अंततः सरकारी व्यय में वृद्धि के कारण मुद्रा की और छपाई और आगे मुद्रास्फीति की आवश्यकता हुई।

Unleash the topper in you

बजट का सार Budget at a Glance

(₹ करोड़) (In ₹ crore)

		2020-2021 वास्तविक Actuals	2021-2022 बजट अनुमान Budget Estimates	2021-2022 संशोधित अनुमान Revised Estimates	2022-2023 बजट अनुमान Budget Estimates
1. राजस्व प्राप्तियां	1. Revenue Receipts	1633920	1788424	2078936	2204422
2. कर राजस्व (केंद्र को निवल)	2. Tax Revenue (Net to Centre)	1426287	1545396	1765145	1934771
3. कर-भिन्न राजस्व	3. Non Tax Revenue	207633	243028	313791	269651
4. पूंजी प्राप्तियां [1]	4. Capital Receipts	1875916	1694812	1691064	1740487
5. ऋणों की वसूली	5. Recovery of Loans	19729	13000	21975	14291
6. अन्य प्राप्तियां	6. Other Receipts	37897	175000	78000	65000
7. उधार और अन्य देयताएं [2]	7. Borrowings and Other Liabilities[1]	1818291	1506812	1591089	1661196
8. कुल प्राप्तियां (1+4)	8. Total Receipts (1+4)	3509836	3483236	3770000	3944909
9. कुल व्यय (10+13)	9. Total Expenditure (10+13)	3509836	3483236	3770000	3944909
10. राजस्व खाते पर जिसमें से	10. On Revenue Account of which	3083519	2929000	3167289	3194663
11. ब्याज भुगतान	11. Interest Payments	679869	809701	813791	940651
12. पूंजी परिसंपत्तियों के सृजन हेतु सहायता अनुदान	12. Grants in Aid for creation of capital assests	230865	219112	237685	317643
13. पूंजी खाते पर [3]	13. On Capital Account[2]	426317	554236	602711	750246
14. (12+13)[4]	14. Effective Capital Expenditure (12+13)[3]	657182	773348	840396	1067889
15. राजस्व घाटा (10-1)	15. Revenue Deficit (10-1)	1449599 (7.3)	1140576 (5.1)	1088352 (4.7)	990241 (3.8)
16. प्रभावी राजस्व घाटा (15-12)	16. Effective Revenue Deficit (15-12)	1218734 (6.2)	921464 (4.1)	850667 (3.7)	672598 (2.6)
17. राजकोषीय घाटा [9-(1+5+6)]	17. Fiscal Deficit [9-(1+5+6)]	1818291 (9.2)	1506812 (6.8)	1591089 (6.9)	1661196 (6.4)
17. प्राथमिक घाटा (17-11)	18. Primary Deficit (17-11)	1138422 (5.8)	697111 (3.1)	777298 (3.3)	720545 (2.8)

रूपए कहाँ से आता है

बजट 2022-23

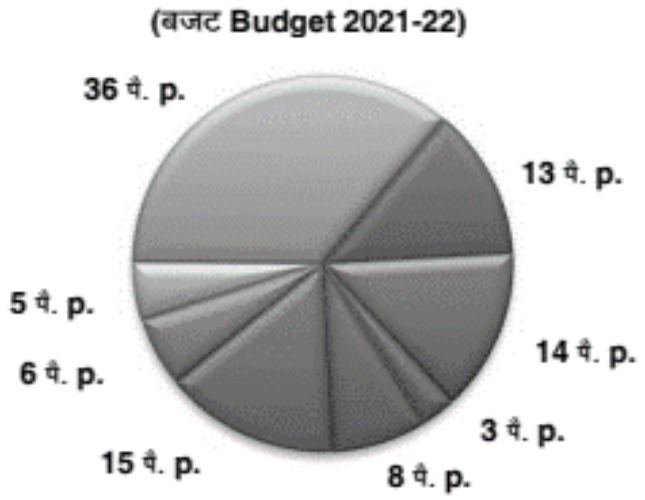

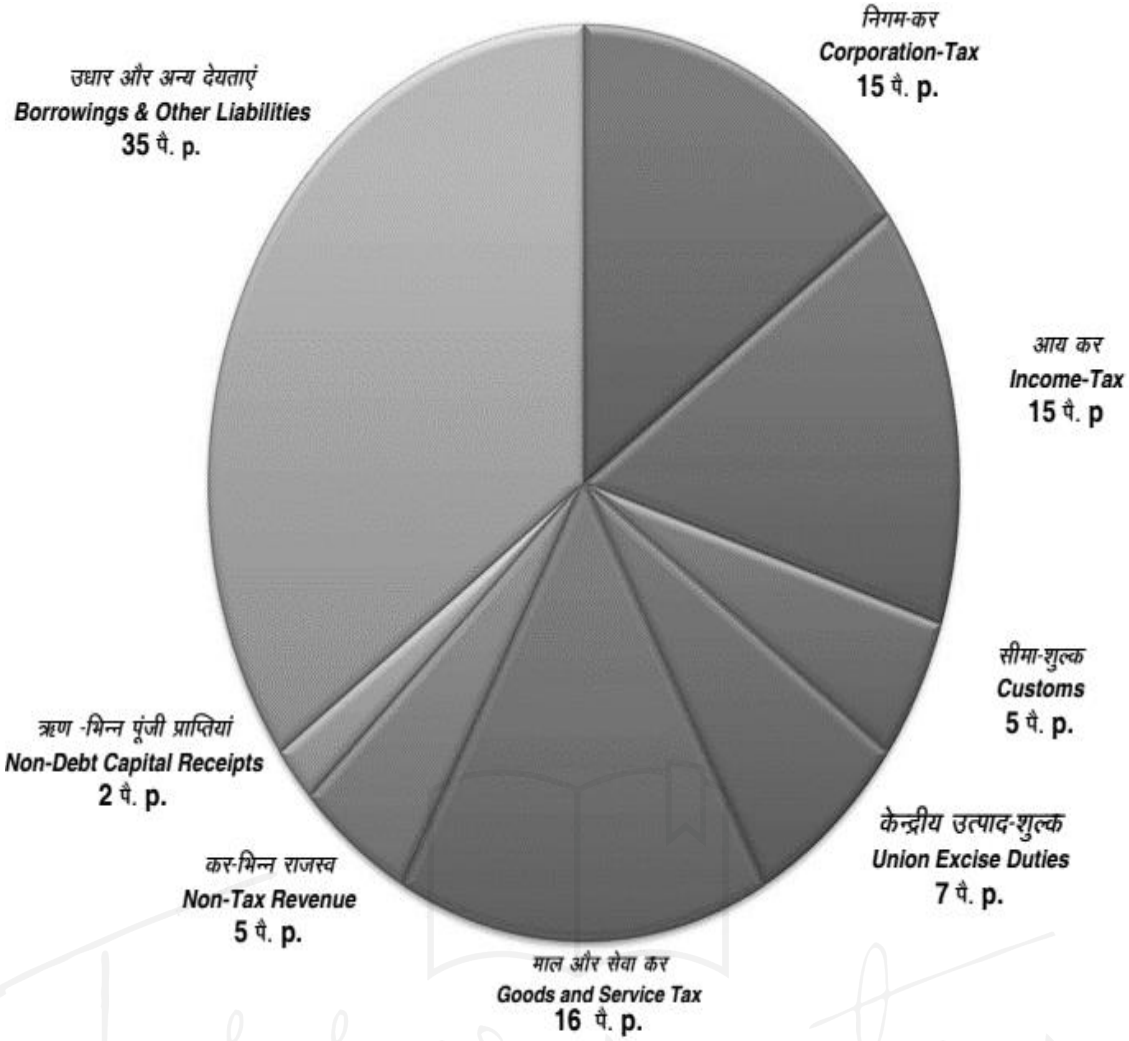

टिप्पणियां:-1. *कुल प्राप्तियों में करों और शुल्कों में राज्यों का हिस्सा शामिल है, जिन्हें पृष्ठ 1 पर सारणी में घटा दिया गया है*

2. आंकड़ों को पूर्णांकित किया गया है।

ToppersNotes Unleash the topper in you

रुपया कहां जाता है Rupee Goes To

(बजट Budget 2022-23)

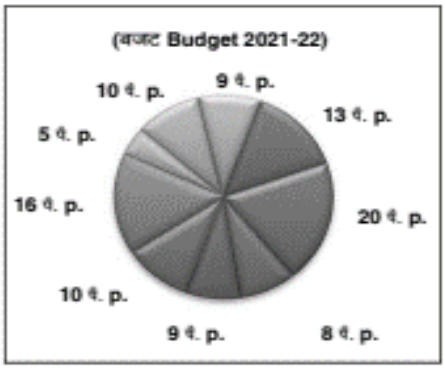

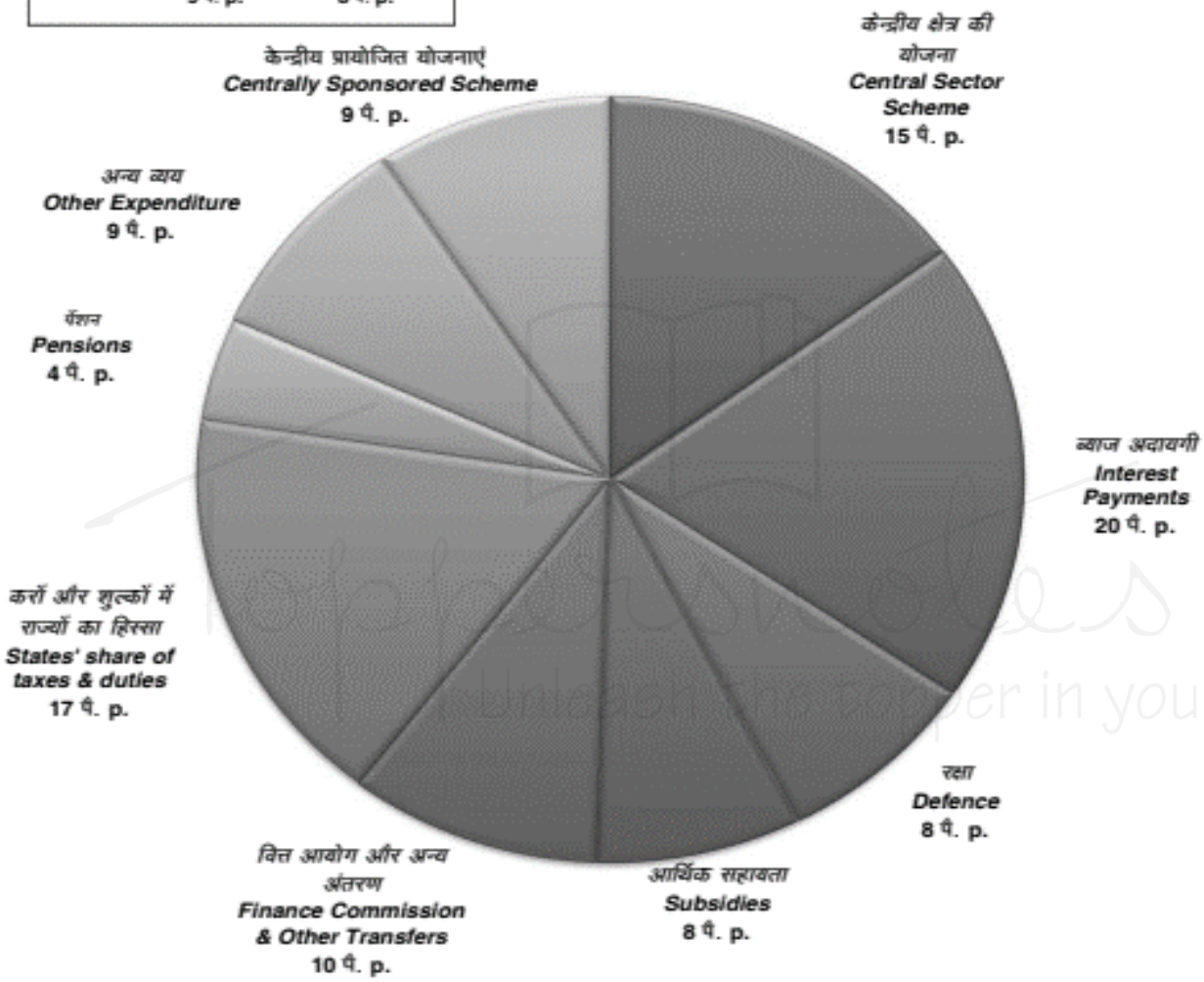

टिप्पणी :-1. कुल व्यय में करों और शुल्कों में राज्यों का हिस्सा शामिल है, जिन्हें पृष्ठ 1 पर सारणी में प्राप्तियों में से घटा दिया गया है।
2. आंकड़ों को पूर्णांकित किया गया है।

घाटे का सार Deficit Statistics

(₹ करोड़) (In ₹ crore)

		2020-2021 वास्तविक Actuals	2021-2022 बजट अनुमान Budget Estimates	2021-2022 संशोधित अनुमान Revised Estimates	2022-2023 बजट अनुमान Budget Estimates
1. राजकोषीय घाटा	1. Fiscal Deficit	1818291 (9.2)	1506812 (6.8)	1591089 (6.9)	1661196 (6.4)
2. राजस्व घाटा	2. Revenue Deficit	1449599 (7.3)	1140576 (5.1)	1088352 (4.7)	990241 (3.8)
3. प्रभावी राजस्व घाटा	3. Effective Revenue Deficit	1218734 (6.2)	921464 (4.1)	850667 (3.7)	672598 (2.6)
4. प्राथमिक घाटा	4. Primary Deficit	1138422 (5.8)	697111 (3.1)	777298 (3.3)	720545 (2.8)

राजकोषीय घाटा वित्तपोषण के स्रोत Sources of Financing Fiscal Deficit

(₹ करोड़) (In ₹ crore)

		2020-2021 वास्तविक Actuals	2021-2022 बजट अनुमान Budget Estimates	2021-2022 संशोधित अनुमान Revised Estimates	2022-2023 बजट अनुमान Budget Estimates
1. ऋण प्राप्तियां (निवल)	1. Debt Receipts (Net)	1825479	1435428	1416902	1660444
2. बाजार उधार (सरकारी प्रतिभूति+ राजकोषीय हुंडी)	**2. Market Borrowings (G-sec +T Bills)**	**1239737**	**967708**	**875771**	**1158719**
3. अल्प बचतों के बदले प्रतिभूतियां	**3. Securities against Small Savings**	**483733**	**391927**	**591524**	**425449**
4. राज्य भविष्य निधियां	**4. State Provident Funds**	**18514**	**20000**	**20000**	**20000**
5. अन्य प्राप्तियां (आंतरिक ऋण तथा लोक लेखा)	**5. Other Receipts (Internal Debts and Public Account)**	**13315**	**54280**	**(-)90140***	**37025**
6. विदेशी ऋण	**6. External Debt**	**70181**	**1514**	**19746**	**19251**
7. नकदी शेष का कम आहरण	7. Draw Down of Cash Balance	(-)7188	71383	174187	752

प्रमुख मदों का व्यय Expenditure of Major Items

(₹ करोड़) (In ₹ crore)

		2020-2021 वास्तविक Actuals	2021-2022 बजट अनुमान Budget Estimates	2021-2022 संशोधित अनुमान Revised Estimates	2022-2023 बजट अनुमान Budget Estimates
पेंशन	Pension	208473	189328	198962	207132
रक्षा	Defence	340094	347088	368418	385370
सब्सिडी -	Subsidy -				
- उर्वरक	Fertiliser	127922	79530	140122	105222
- खाद्य	Food	541330	242836	286469	206831
- पेट्रोलियम	Petroleum	38455	14073	6517	5813
कृषि और संबद्ध कार्यकलाप	Agriculture and Allied Activities	134420	148301	147764	151521
वाणिज्य और उद्योग	Commerce and Industry	21554	34623	45833	53116
पूर्वोत्तर का विकास	Development of North East	1854	2658	2658	2800
शिक्षा	Education	84219	93224	88002	104278
ऊर्जा	Energy	32728	41747	48684	49220
विदेश	External Affairs	14329	18155	16000	17250
वित्त	Finance	37038	91916	51904	21354
स्वास्थ्य	Health	80026	74602	85915	86606
गृह	Home Affairs	96652	113521	115550	127020
ब्याज	Interest	679869	809701	813791	940651
आईटी और दूरसंचार	IT and Telecom	32778	53108	28757	79887
अन्य	Others	91998	87528	101864	113301
योजना और सांख्यिकी	Planning and Statistics	3172	2472	4808	5720
ग्रामीण विकास	Rural Development	214246	194633	206948	206293
वैज्ञानिक विभाग	Scientific Departments	22100	30640	28510	30571
सामाजिक कल्याण	Social Welfare	37563	48460	44952	51780
कर प्रशासन [1]	Tax Administration[1]	146439	131100	195351	171677
जिसमें से जीएसटी क्षतिपूर्ति निधि को अंतरण	*of which Transfer to GST Compensation Fund*	*106317*	*100000*	*110795*	*120000*
राज्यों का अंतरण	Transfer to States	211475	293302	285394	334339
परिवहन	Transport	216795	233083	325443	351851
संघ राज्य क्षेत्र	Union Territories	47605	53026	57533	58757
शहरी विकास	Urban Development	46701	54581	73850	76549
कुल जोड़	**Grand Total**	**3509836**	**3483236**	**3770000**	**3944909**

[1] इसमें स्क्रीप आधारित योजनाओं के लिए बकाया भुगतान शामिल है।
[1] This also includes payment of arrears for scrip based schemes.

3
CHAPTER

लोक वित्त

- **सार्वजनिक वित्त** - विभिन्न सरकारी, अर्ध-सरकारी संस्थानों, नीतियों और उपकरणों के माध्यम से देश के राजस्व, व्यय और ऋण का प्रबंधन।

अवयव

- सार्वजनिक राजस्व
- सरकारी व्यय
- सार्वजनिक ऋण
- राजकोषीय नीति
- वित्तीय जाँच
- वित्तीय प्रशासन
- सार्वजनिक उधार।

सार्वजनिक राजस्व

- **सार्वजनिक राजस्व** - सरकार की आय।

प्रकार

- **कर राजस्व** - देश के लोगों द्वारा भुगतान किया गया कर। **जैसे** - आयकर, बिक्री कर, शुल्क आदि।
- **गैर-कर राजस्व** - अन्य देशों को पैसे उधार देने से ब्याज आय, सरकारी संपत्तियों से किराया और आय, विश्व संगठनों से दान, आदि।

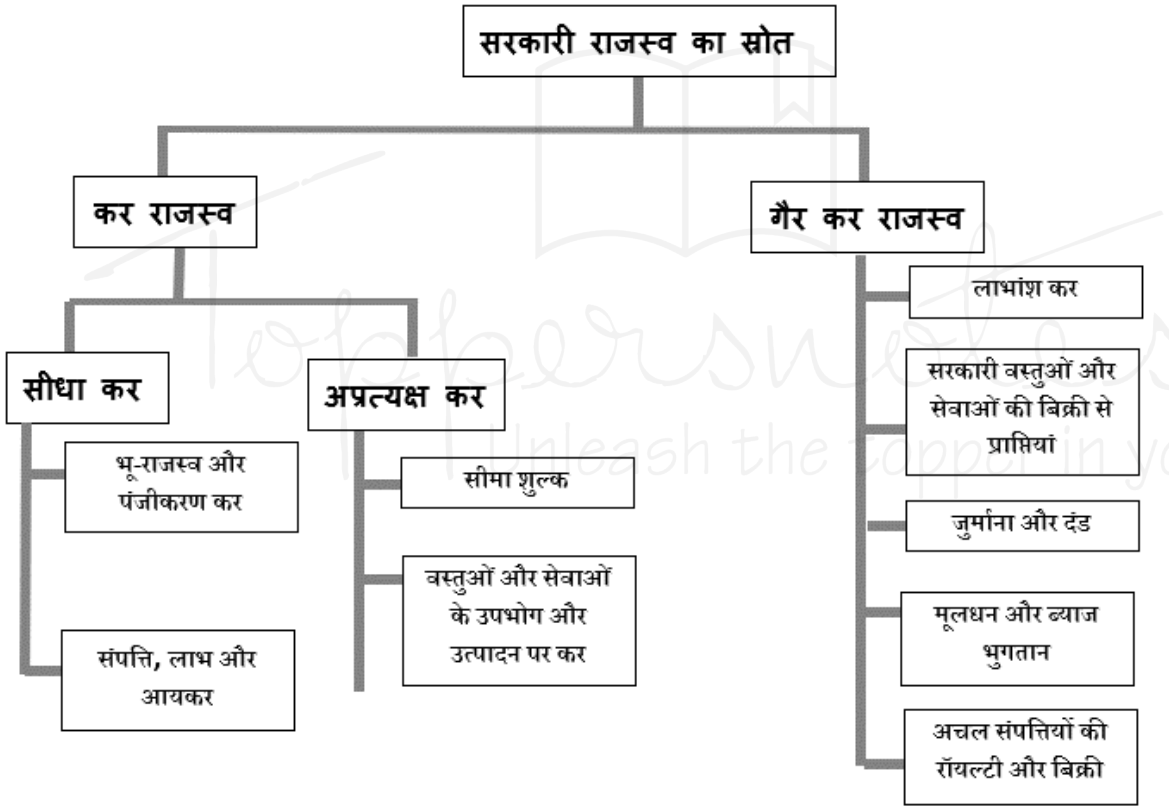

सरकारी व्यय

सार्वजनिक व्यय - सार्वजनिक प्राधिकरणों द्वारा सरकारों के रखरखाव के साथ-साथ पूरे समाज के लाभ के लिए किए गए व्यय।

प्रकार

- **विकासात्मक व्यय** - सामाजिक और सामुदायिक सेवाओं, आर्थिक सेवाओं आदि पर किया गया व्यय।
- **गैर-विकासात्मक व्यय** - प्रशासनिक सेवा, रक्षा सेवा, ऋण सेवा, सब्सिडी आदि के लिए किए गए व्यय।
- **राजस्व व्यय** - नागरिक व्यय (जैसे सामान्य सेवाएँ, सामाजिक और सामुदायिक सेवाएँ और आर्थिक सेवाएँ), रक्षा व्यय, आदि।
- **पूँजीगत व्यय** - सामाजिक और सामुदायिक विकास, आर्थिक विकास, रक्षा, सामान्य सेवाओं आदि पर किए गए व्यय।
- **योजना व्यय** - कृषि, ग्रामीण विकास, सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण, ऊर्जा, उद्योग और खनिज संसाधनों आदि पर होने वाले व्यय को योजना व्यय में शामिल किया जाता है।
- **गैर-योजना व्यय** - सभी उपभोज्य, अनुत्पादक, गैर-परिसंपत्ति भवन गैर-योजना व्यय हैं।

सार्वजनिक ऋण

सार्वजनिक ऋण - जब सार्वजनिक व्यय सार्वजनिक आय से अधिक हो जाता है, तो अंतर को जनता से या अन्य देशों या विश्व बैंक जैसे विश्व संगठनों से पैसे उधार लेकर भर दिया जाता है।

भारत का सार्वजनिक ऋण - केंद्र की देनदारियों के तीन खंड हैं -

- आंतरिक देयताएँ
- बाहरी देयताएँ
- सार्वजनिक खाता देयताएँ

भारत का सार्वजनिक ऋण - इसमें केवल केंद्र सरकार द्वारा वहन की गई आंतरिक और बाहरी देनदारियाँ शामिल हैं -

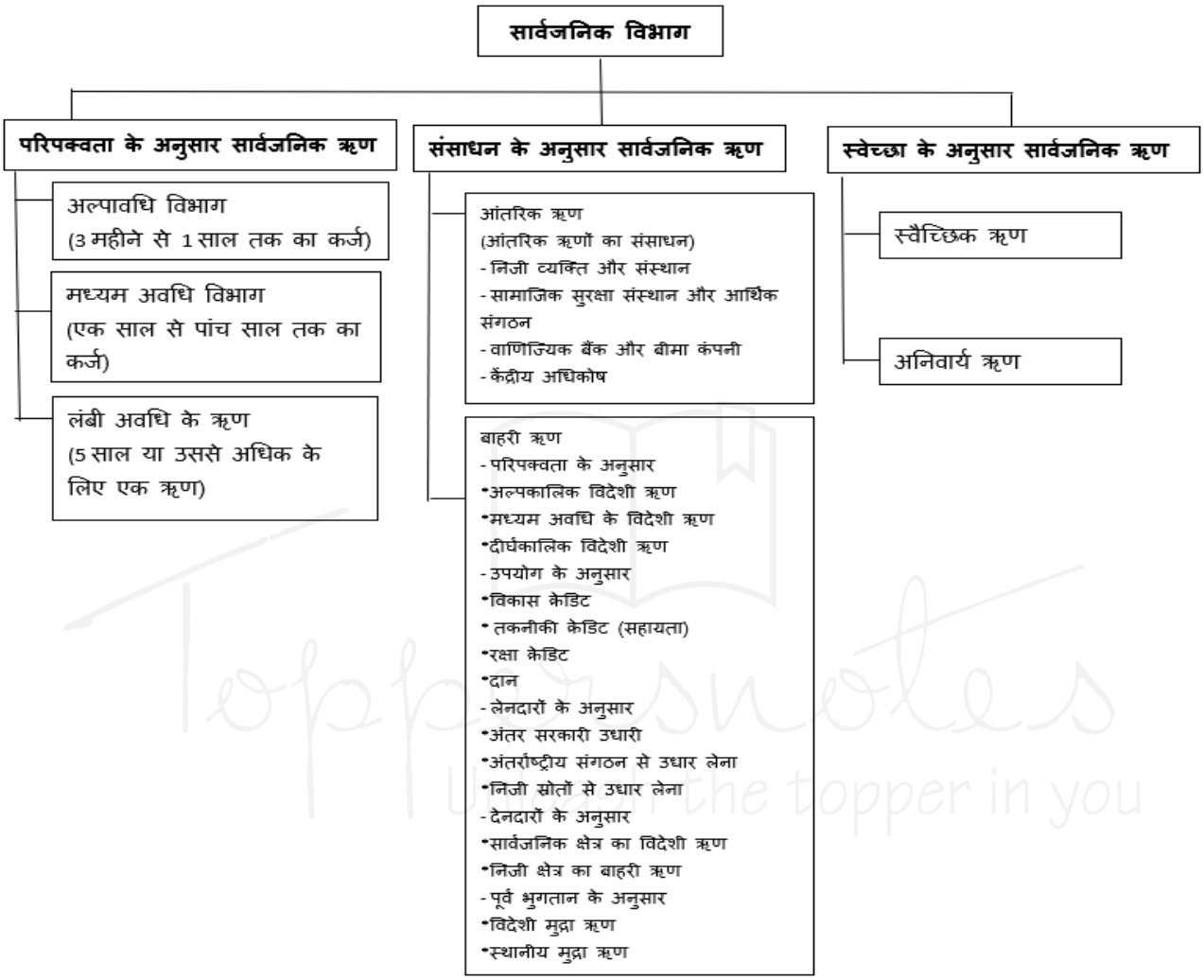

सार्वजनिक ऋण की संरचना

आंतरिक खंड	**इसमें शामिल है** • **दिनांकित प्रतिभूतियाँ -** लोकप्रिय रूप से सरकारी प्रतिभूतियों (सरकारी प्रतिभूतियों) के रूप में जानी जाती हैं, जो मुख्य रूप से केंद्र द्वारा विभिन्न परिपक्वताओं (लघु, मध्यम और दीर्घकालिक) के निश्चित कूपन बांड के रूप में जारी की जाती हैं। ○ केंद्र के लिए घाटे के वित्तपोषण का एकमात्र सबसे महत्वपूर्ण स्रोत (90% से अधिक)। • **ट्रेजरी बिल** - शून्य कूपन प्रतिभूतियाँ केंद्र द्वारा छूट पर जारी की जाती हैं और परिपक्वता पर उनके अंकित मूल्य पर छुड़ाई जाती हैं। ○ अल्पावधि (365 दिनों से कम) के लिए जारी आज उनके तीन कार्यकाल हैं- 91, 182 और 364 दिन। • **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों को जारी की गई प्रतिभूतियाँ** - अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों जैसे IMF, विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक, आदि में भारत के योगदान के रूप में जारी की गई प्रतिभूतियाँ। • **'लघु बचत' के विरुद्ध जारी प्रतिभूतियां** - लघु बचत योजना (SSS) के तहत जमा राशि को NSSF (राष्ट्रीय लघु बचत कोष) में जमा किया जाता है, जिससे निकासी भी होती रहती है।

	○ NSSF की शेष राशि (शुद्ध निकासी) केंद्र द्वारा जारी विशेष सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश की जाती है।
बाहरी खंड	• केंद्र द्वारा अपने स्वयं के उपयोग (राज्यों द्वारा लिए गए को छोड़कर) के लिए बाहरी उधार के माध्यम से बनाई गई बाहरी देनदारियाँ। • IMF, विश्व बैंक, ADB, सॉवरेन फंड, विदेशी सरकारों, से विभिन्न प्रकार के 'बहुपक्षीय' और 'द्विपक्षीय' ऋणों से बना है। • **मूडीज इन्वेस्टर्स सर्विस** - उच्चतम उभरती अर्थव्यवस्थाओं में भारत का सार्वजनिक ऋण स्तर, जो मात्रात्मक सहजता कार्यक्रम के साथ चल रहा है, जबकि इसकी ऋण क्षमता सबसे कमजोर है।
समायोजित ऋण	• अवधारणा की उत्पत्ति 2010 में हुई थी। • वर्तमान परिवर्तन दर पर बाह्य ऋण के प्रभाव में फैक्टरिंग के बाद ऋण राशि को इंगित करता है और बाजार स्थिरीकरण योजना और NSSF देनदारियों को समाप्त करने के लिए केंद्र सरकार के घाटे के वित्तपोषण के लिए उपयोग नहीं किया जाता है।

राजकोषीय नीति

राजकोषीय नीति

- एक मार्गदर्शक तंत्र जो सरकार को यह निर्धारित करने में सहायता करता है कि उसे आर्थिक गतिविधि का समर्थन करने के लिए कितना पैसा खर्च करना चाहिए और अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ने के लिए सिस्टम से कितनी आय प्राप्त करनी चाहिए।
- राजकोषीय नीति के माध्यम से, किसी देश की सरकार अर्थव्यवस्था को नेविगेट करने के लिए कर राजस्व और सार्वजनिक व्यय के प्रवाह को नियंत्रित करती है।

राजकोषीय नीति का उद्देश्य

- **आर्थिक विकास** - राजकोषीय नीति अर्थव्यवस्था की विकास दर को बनाए रखने में मदद करती है ताकि कुछ आर्थिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।
- **मूल्य स्थिरता** - यह देश के मूल्य स्तर को नियंत्रित करता है ताकि जब मुद्रास्फीति बहुत अधिक हो, तो कीमतों को नियंत्रित किया जा सके।
- **पूर्ण रोजगार** - इसका उद्देश्य निम्न आर्थिक गतिविधि से उबरने के लिए एक उपकरण के रूप में पूर्ण रोजगार या पूर्ण रोजगार प्राप्त करना है।

राजकोषीय नीति के घटक

- **पूँजी खाता** - सरकार की देनदारियाँ शामिल हैं।
  - **पूँजीगत व्यय -** भौतिक या वित्तीय संपत्ति बनाने के लिए सरकार द्वारा किया गया व्यय। यह या तो संपत्ति बनाता है या सरकार की देनदारियों में कमी का कारण बनता है।
  - इसमें शामिल है -
    - सरकार द्वारा ऋण वितरण
    - सरकार द्वारा ऋण पुनर्भुगतान
    - सरकार का योजना व्यय
    - रक्षा पर पूँजीगत व्यय
  - **पूँजीगत प्राप्तियाँ** - सरकार पर देयता या संपत्ति कम कर देता है।
    - इसमें शामिल है -
      - बैंकों से उधार
      - विदेशी सरकारों से उधार
      - ऋण वसूली
      - सरकार द्वारा अन्य प्राप्तियाँ

  राजस्व खाता - क्रेडिट बैलेंस वाला खाता
  - **राजस्व व्यय -** सरकार द्वारा किया गया व्यय जो न तो संपत्ति या दायित्व बनाता है। ये व्यय केवल सरकार द्वारा ऋण पर ब्याज भुगतान, राज्य सरकारों को अनुदान और सामान्य व्यय हैं।

  प्रकार
  - **योजना व्यय** - यह केंद्र सरकार की योजनाओं और अन्य राज्य और केंद्र शासित प्रदेश की योजनाओं के लिए किया जाता है।
  - **गैर योजना व्यय** - इसमें सामान्य व्यय जैसे वेतन, पेंशन, ब्याज भुगतान आदि शामिल हैं।
  - इसमें शामिल है -
    - सरकार द्वारा ब्याज भुगतान
    - वेतन, पेंशन और भविष्य निधि
    - सब्सिडी
    - रक्षा व्यय
    - सरकार द्वारा अनुदान
- **राजस्व प्राप्तियाँ** - सरकार को वर्तमान आय और सरकार से वापस नहीं लिया जा सकता है।

  प्रकार
  - **कर राजस्व** - यह राजस्व प्राप्तियों का मुख्य घटक है और इसमें सरकार द्वारा किए गए कर और शुल्क शामिल हैं। इसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह के कर शामिल हैं।
  - **गैर-कर राजस्व** - इसमें सरकार के ऋणों पर ब्याज, लाभांश और निवेश पर लाभ और विदेशी सहायता शामिल है।
  - इसमें शामिल है -
    - सभी प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कर
    - लाभ और लाभांश
    - सरकार द्वारा प्राप्त ब्याज
    - सरकार द्वारा प्राप्त अनुदान
    - शुल्क, दंड और जुर्माना

राजकोषीय नीति बनाम मौद्रिक नीति

	मौद्रिक नीति	राजकोषीय नीति
साधन	ब्याज दर	कर और सरकारी खर्च
प्रभाव	उधार लेने/ गिरवी रखने की लागत	बजट घाटा
वितरण	ऊँची ब्याज दरे मकान मालिकों पर पड़ीं लेकिन बचतकर्ताओं को फायदा	निर्भर करता हैं की आप कौन से कर उठाते हैं।
विनिमय दर	उच्च ब्याज दरें प्रशंसा का कारन बनती हैं ।	विनिमय दर पर कोई प्रभाव नहीं।
आपूर्ति विभाग की तरफ	सीमित प्रभाव	उच्च कर काम करने के लिए प्रोत्साहन को प्रभावित कर सकते हैं।
राजनीती	स्वत्रंत सेंट्रल बैंक द्वारा निर्धारित मौद्रिक नीति	कर और सरकारी खर्च को अत्यधिक राजनीती बदलना ।
चलनिधि जाल	ब्याज दरों में कटौती से काम नही चलता और तरलता का जाल।	बहुत गहरी मंदी में राजकोषीय नीति की सलाह।

राजकोषीय नीति के प्रकार

विस्तारवादी राजकोषीय नीति		**संकुचनकारी राजकोषीय नीति**	
कार्य	**प्रभाव**	**कार्य**	**प्रभाव**
कर कम करें	कर बचत बढ़ाने के खर्च के लिए उपलब्ध धन में वृद्धि होती है इसलिए उपभोक्ता और व्यवसाय अधिक खरीदारी करते है। AD बढ़ा दी गई है।	**कर बढांए**	कर व्यय बढ़नें से खर्च के लिए उपलब्ध धन कम हो जाता है, इसलिए उपभोक्ता और व्यवसाय कम खर्च करते हैं। AD कम हो गई है।
बढ़ा हुआ सरकारी खर्च	बढते सरकारी खर्च से उपभोक्ता और व्यवसायों को सामान और सेवाओं की खरीद के लिए आवश्यक धन उपलब्ध होता है। AD बढ़ा है।	**सरकारी खर्च में कमी**	सरकारी खर्च घटने से उपभोक्ता और व्यवसायों के लिए सामान ओर सेवाओं की खरीद के लिए आवष्यक धन कम हो जाता है । AD कम हो गई ।

विकास

पहला चरण (1947–1970)	• घाटे के वित्तपोषण की कोई अवधारणा और घाटे को बजटीय घाटे के रूप में नहीं दिखाया गया था। **प्रमुख पहलू** - • सरकार ने अर्थव्यवस्था के अंदर और बाहर से उधार लेने की कोशिश की लेकिन लक्ष्य को पूरा करने में असमर्थ रही। • 1950 ई. - कर संग्रह बढ़ाने और राजस्व व्यय की जाँच करने के प्रयास किए गए। • RBI से भारी उधारी और अंत में बैंकों का राष्ट्रीयकरण। • उच्च राजस्व व्यय (वेतन) के साथ विशाल सार्वजनिक उपक्रमों की स्थापना। • उपरोक्त सभी साधनों का सहारा लेने के बाद भी आवश्यक स्तर के निवेश के लिए जाने में असमर्थ।
दूसरा चरण (1970–1991)	• घाटे के वित्तपोषण की अवधि, अर्थशास्त्र के गलत बुनियादी सिद्धांतों का पालन करना और अंतत: वर्ष 1990-91 तक एक गंभीर वित्तीय संकट में परिणत होना। **प्रमुख पहलू** • राष्ट्रीयकरण नीति और PSU के विस्तार पर बढ़ा जोर। • आगामी सार्वजनिक उपक्रमों ने सरकार के राजस्व के साथ-साथ पूँजी के कुल व्यय में वृद्धि की। • मौजूदा PSU अर्थव्यवस्था से अपना बकाया ले रहे थे।

	• सरकारें दोनों मोर्चों पर विफल रही हैं-जनसंख्या वृद्धि और बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन की जाँच। • नियोजित विकास अत्यधिक केंद्रीकृत रहा और स्थानीय आकांक्षाओं के लिए कोई स्थान नहीं रहा। • योजनागत व्यय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में निवेश के माध्यम से किया गया था जो लाभ के उद्देश्य के लिए प्रतिबद्ध नहीं थे।
तीसरा चरण (1991 से आगे)	• राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने जैसी IMF द्वारा रखी गई शर्तों के तहत आर्थिक सुधार प्रक्रिया की शुरुआत। • अर्थव्यवस्था का सरकारी प्रभुत्व से बाजार प्रभुत्व में प्रवेश हुआ। • सरकार द्वारा की गई कार्रवाई - सरकारों (केंद्र और राज्य) के व्यय को युक्तिसंगत बनाना; अपने स्वयं के कर और गैर-कर राजस्व में वृद्धि करना; वित्तीय बाजारों को मजबूत और विस्तारित करना।

त्रिलमास(TRILEMMAS)

- ये सबसे चुनौतीपूर्ण नीतिगत निर्णय हैं जिनका लोकतांत्रिक सरकारें सही प्रकार की राजकोषीय नीति निर्धारित करते समय सामना करती हैं।
- मुंडेल की 'असंभव त्रिमूर्ति'- यह पुरानी त्रयी यह दावा करती है कि एक देश, एक साथ, सभी तीन नीतिगत लक्ष्यों को बनाए नहीं रख सकता है।
    - मुक्त पूँजी प्रवाह।
    - एक निश्चित विनिमय दर।
    - एक स्वतंत्र मौद्रिक नीति।

घाटे और प्रकार

- घाटा एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यय राजस्व से अधिक होता है।
- घाटे में कुल ऋणात्मक राशियाँ कुल धनात्मक राशियों से अधिक होती हैं अर्थात् धन का बहिर्वाह निधियों के प्रवाह से अधिक होता है।

घाटे के प्रकार

राजस्व घाटा	• **RD = राजस्व व्यय – राजस्व प्राप्तियाँ**
प्रभावी राजस्व घाटा	• यह सरकार के वास्तविक उपभोग व्यय के लिए उपयोग की जा रही पूँजीगत प्राप्तियों की राशि को दर्शाता है। • **ERD (GDP का 1.8%) = राजस्व घाटा - पूँजीगत संपत्ति के निर्माण के लिए अनुदान।**
प्राथमिक घाटा	• यह ब्याज को छोड़कर, सरकार की उधार आवश्यकताओं को इंगित करता है। • यह वह राशि है जिसके द्वारा सरकार का कुल व्यय कुल आय से अधिक होता है। • प्राथमिक घाटे में किए गए ब्याज भुगतान शामिल नहीं हैं। • **प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा (कुल व्यय - सरकार की कुल आय) - ब्याज देनदारियाँ (पिछले उधारों की) ।** • यह सकल घरेलू उत्पाद का 0.4% है।
बंद बजट वित्तपोषण	• व्यय जो बजट के माध्यम से वित्त पोषित नहीं है।
बजट घाटा	• यह तब होता है जब व्यय राजस्व से अधिक हो जाता है और किसी देश के वित्तीय स्वास्थ्य का संकेत देता है। • सरकार आमतौर पर बजट घाटे शब्द का उपयोग करती है, जब व्यवसायों या व्यक्तियों द्वारा राष्ट्रीय ऋण से अर्जित घाटे के बजाय खर्च का जिक्र किया जाता है।
शून्य प्राथमिक घाटा	• इसलिए, जब प्राथमिक घाटा शून्य होता है, तो राजकोषीय घाटा ब्याज भुगतान के बराबर हो जाता है। • इसका मतलब है कि सरकार ने सिर्फ ब्याज भुगतान का भुगतान करने के लिए उधार का सहारा लिया है। • इसके अलावा, मौजूदा ऋण में कुछ भी नहीं जोड़ा जाता है।
राजकोषीय फिसलन	• सरल शब्दों में राजकोषीय फिसलन अपेक्षित से व्यय में कोई विचलन है।
मुद्रीकृत घाटा	• मुद्रीकृत घाटा वह सीमा है जिस तक आरबीआई अपने उधार कार्यक्रम में केंद्र सरकार की मदद करता है। • दूसरे शब्दों में, मुद्रीकृत घाटे का अर्थ है केंद्र सरकार को शुद्ध RBI क्रेडिट में वृद्धि, ताकि सरकार की मौद्रिक